25.12.82

विधि, विधान और वरदान

विश्व अधिकारी, विश्व निर्माता, वरदानी मूर्त अव्यक्त बाप-दादा, बड़े दिन के अवसर पर अपने बच्चों के प्रति बोले:-

आज सर्व स्नेही बच्चों के स्नेह का रेसपान्ड करने के लिए बापदादा को भी मिलने के लिए आना पड़ा है। सारे विश्व के बच्चों के स्नेह का, याद का आवाज बाप-दादा के वतन में मीठे-मीठे साज़ के रूप में पहुँच गया। जैसे बच्चे स्नेह के गीत गाते हैं, बापदादा भी बच्चों के गुणों के गीत गाते हैं। जैसे बच्चे कहते कि ऐसा बाप-दादा कल्प में नहीं मिलेगा, बाप-दादा भी बच्चों को देख कहते कि ऐसे बच्चे भी कल्प में नहीं मिलेंगे। ऐसी मीठी-मीठी रूह-रूहान बाप और बच्चों की सदा सुनते रहते हो? बाप और आप कम्बाइन्ड रूप हैं ना। इसी स्वरूप को ही सहजयोगी कहा जाता है। योग लगाने वाले नहीं लेकिन सदा कम्बाइन्ड अर्थात् साथ रहने वाले। ऐसी स्टेज अनुभव करते हो वा बहुत मेहनत करनी पड़ती है? बचपन का वायदा क्या किया? साथ रहेंगे, साथ जियेंगे, साथ चलेंगे। यह वायदा किया है ना, पक्का? साकार की पालना के अधिकारी आत्मायें हो। अपने भाग्य को अच्छी तरह से सोचो और समझो।

(बपदादा के सामने (हांगकांग के) दादाराम और सावित्री बहन का लौकिक परिवार बैठा हुआ है)

ऐसे कोटों में कोई भाग्य विधाता के सम्मुख सम्पर्क में आते हैं। अभी समय आने पर यह अपना भाग्य स्मृति में आयेगा। आदि पिता को पाना – यह है भाग्य की श्रेष्ठ निशानी। सदा साथ रहने वाले निरन्तर योगी, सदा सहजयोगी, उड़ती कला में जाने वाले, सदा फरिश्ता स्वरूप हो?

आज बड़ा दिन मनाने के लिए बुलाया है। बड़े ते बड़े बाप के साथ बड़े ते बड़े बड़ा दिन और मिलन मना रहे हैं। बड़ा दिन अर्थात् उत्सव का दिन। जब बड़ा दिन मनाते हैं तो बुरे दिन समाप्त हो जाते हैं। सिर्फ आज का दिन मनाने का नहीं, लेकिन सदा मनाना अर्थात् उमंग उत्साह में सदा रहना। अविनाशी बाप, अविनाशी दिन, अविनाशी मनाना। बड़ा दिन मनाना अर्थात् स्वयं को सदा के लिए बड़े ते बड़ा बनाना। सिर्फ मनाना नहीं लेकिन बनना और बनाना है। सर्व आत्माओं को बड़े दिन की गिफ्ट कौन सी देंगे? जो भी आत्मा सम्पर्क में आवे उनको ईश्वरीय अलौकिक स्नेह, शक्ति, गुण, सर्व का सहयोग देने की लिफ्ट की गिफ्ट दो। जिससे ऐसी सम्पन्न आत्मायें बन जाएँ जो कोई भी अप्राप्ति अनुभव न करें। ऐसी गिफ्ट दे सकते हो? स्वयं सम्पन्न हो? औरों को देने के लिए पहले अपने पास जमा होगा तब तो दे सकेंगे ना। अच्छा – आज तो गिफ्ट देने और गिफ्ट लेने आये हैं ना। सिर्फ लेंगे वा देंगे भी? शक्ति सेना क्या करेगी? लेने और देने में मज़ा आता है वा सिर्फ लेने में? दाता को देना हुआ या लेना हुआ? बाप भी लेते हैं किसलिए? पदमगुणा करके परिवर्तन कर देने के लिए। बाप को आवश्यकता है क्या? बाप के पास है ही बच्चों को देने के लिए। इसलिए बाप दाता भी है, विधाता भी है, वरदाता भी है, जितना बाप बच्चों के भाग्य को जानते उतना बच्चे अपने भाग्य को नहीं जानते। यह भाग्य के दिन, सदा समर्थ बनाने के दिन याद रखना।

यह सारा ही लकी परिवार है क्योकि इस परिवार के निमित्त बीज, वृक्ष को आगे बढ़ा रहा है और बढ़ता ही रहेगा। उस आत्मा की श्रेष्ठ कामनायें सारे परिवार को लिफट की गिफ्ट के रूप में मिली हुई हैं क्योंकि पवित्र शुद्ध आत्मा थी। इसलिए पवित्रता का जल प्रत्यक्ष फल दे रहा है समझा? साकार रूप में निमित्त माता गुरु (सावित्री) भी बैठी है। माता गुरु बनी और पिता ने लिफ्ट की गिफट दी। अब इस परिवार को क्या करना है? फालो फादर करना है ना। इसमें कुछ छोड़ना नहीं पड़ेगा, डरो नहीं। अच्छा।

डबल विदेशी बच्चे भी पहुँच गये हैं। बाप-दादा भी अभी विदेशी हैं, ब्रह्मा बाप भी तो विदेशी हो गया ना। विदेशी, विदेशी से मिले तो कितनी बड़ी अच्छी बात है। बाप-दादा को सर्व बच्चों की, उसमें भी विशेष निमित्त डबल विदेशी बच्चों की एक विशेष बात देख हर्ष होता है। वह कौन सी? विदेशी बच्चों के विशेष मिलन की लगन बापदादा के पास आज विशेष रूप में पहुँची। साकारी दुनिया के हिसाब से भी आज का दिन विशेष विदेशियों का माना हुआ है। टोली, मिठाई खाई वा अभी खानी है। बाप-दादा मिठाई खिलाते-खिलाते मीठा बना देते हैं, स्वयं तो मीठे बन गये ना। चारों और के आये हुये बच्चों को, मधुबन निवासी बच्चों को बापदादा स्नेह का रिर्टन सदा कम्बाइन्ड अर्थात् सदा साथ रहने का वरदान और वर्सा दे रहे हैं। डबल अधिकारी हो। वर्सा भी मिलता है और वर-दान भी। जहाँ कोई मुश्किल अनुभव हो तो वरदाता के रूप में स्मृति में लाओ। तो वरदाता द्वारा वरदान रूप में प्राप्ति होने से मुश्किल सहज हो जायेगी और प्रत्यक्ष प्राप्ति की अनुभूति होगी।

आज के दिन का विशेष स्लोगन सदा स्मृति में रखना। ३ शब्द याद रखना – विधि, विधान और वरदान। विधि से सहज सिद्धि स्वरूप हो जायेंगे। विधान से विश्व निर्माता, वरदान से वरदानी मूर्त बन जायेंगे। यही ३ शब्द सदा समर्थ बनाते रहेंगे। अच्छा –

चारों ओर के सर्व सिकीलधे, बड़े ते बड़े बाप के बडे ते बड़े बच्चे, सर्व को सम्पन्न बनाने वाले, ऐसे मास्टर विधाता, वरदानी बच्चों को, माया को विदाई देने की बधाई।। इस बधाई के साथ-साथ आज विशेष रूप में बच्चों को उमंग-उत्साह की भी बधाई। सर्व को, जो आकार वा साकार में सम्मुख हैं, ऐसे सर्व सम्मुख रहने वाले बच्चों को बहुत-बहुत याद प्यार और नमस्ते।

दादी-दादी से –

आप दोनों को देख बापदादा को क्या याद आता होगा? जहान के नूर तो हो ही लेकिन पहले बाप के नयनों के नूर हो। कहावत है कि नूर नहीं तो जहान नहीं। तो बापदादा भी नूरे रत्नों को ऐसे ही स्थापना के कार्य में विशेष आत्मा देखते हैं। करावनहार तो कर रहा है, करनहार लेकिन निमित्त बच्चों को बनाते हैं। करनकरावनहार, इस शब्द में भी बाप और बच्चे दोनों कम्बाइन्ड हैं ना। हाथ बच्चों का और काम बाप का। हाथ बढ़ाने का गोल्डन चांस बच्चों को ही मिला है। बड़े ते बड़ा कार्य भी कैसा लगता है? अनुभव होता है ना कि कराने वाला करा रहा है। निमित्त बनाए चला रहा है। यही आवाज सदा मन से निकलता है। बापदादा भी सदा बच्चों के हर कर्म में करावनहार के रूप में साथी हैं। सथ हैं वा चले गये हैं? ऑख मिचौली का खेल खेला है। खेल भी बच्चों से ही करेंगे ना। खेल में क्या होता है? ताली बाजाई और खेल शुरू हुआ। यह भी ड्रामा की ताली बजी और ऑख मिचौली का खेल शुरु हुआ।

अब स्वीट होम का गेट कब खोलेंगे? जैसे कानफ्रेन्स की डेट फिक्स की है, हाल बनाने की डेट फिक्स की, तो उसका प्रोग्राम नहीं बनाया? गेट खोलने के पहले सामग्री तो आप तैयार करेंगे वा वह भी बाप करे – वह तैयार है? ब्रहमा बाप तो एवररेडी है ही। अब साथी भी एवररेडी चाहिए ना।

८ की माला बना सकते हो? अभी बन सकती है? पहले ८ की माला तैयार हो गई तो फिर और पीछे वाले तैयार हो ही जायेंगे आठ एवररेडी हैं? नाम निकाल कर भेजना। सभी वेरीफाय करें कि हाँ। इसको कहेंगे एवररेडी। बाप पसन्द, ब्राहमण परिवार पसन्द और विश्व की सेवा के पसन्द। यह तीनों विशेषता जब होगी तब कहेंगे एवररेडी हैं। पहले कंगन तैयार होगा फिर बड़ी माला तैयार होगी। अच्छा –

सावित्री बहन से – अपने गुप्त वरदानों को प्रत्यक्ष रूप में देख रही हो? अब समझती हो मैं कौन हूँ? सर्विसएबुल की लिस्ट में अपना नम्बर आगे समझती हो ना। सर्विस के प्रत्यक्ष फल के निमित्त बनी। निमित्त तो फिर भी बीज कहेंगे ना। सर्विसएबुल की लिस्ट में बहुत आगे हो, सिर्फ कभी-कभी अपने को भूल जाती हो। जब बापदादा स्वीकार कर रहे हैं तो बाकी क्या चाहिए। सभी की सर्विस एक जैसी नहीं होती। वैरायटी आत्मायें हैं, वैरायटी सेवा का तरीका है। ज्यादा सोचने से नहीं होगा, स्वत: होगा। अपने को सदा बाप के समीप रत्न समझो, अधिकारी जन्म से हो। जन्म से फास्ट गई ना। समीप रहने का वरदान जन्मते ही मिला। साकार में समीप रहने का वरदान कितनों को मिला। गिनती करो तो ऐसे वरदानी ढूँढते भी मुश्किल मिलेंगे। इसलिए बाप के समीप समझते हुए आगे बढ़ते रहो। जितना होता, जैसा होता कल्याणकारी। सोचो नहीं, नि:संकल्प रहो। बाप का वायदा है, बाप सदा साथ निभाते रहेंगे। अपना संकल्प भी बाप के ऊपर छोड़ दो। सर्विस बढ़ेगी या नहीं बढ़ेगी, बाप जाने। नहीं बढ़ेगी तो बाप जिम्मेवार है, आप नहीं। इतनी निश्चिन्त रहो। आपने तो बाप के आगे अपना संकल्प रख दिया ना। तो जिम्मेवार कौन? सिकीलधे हो – कितने सिक से बाप ने ढूंढा। पहला-पहला सेवा का रत्न सारी विश्व से चुना है, इसलिए भूलो नहीं। अच्छा।

सावित्री बहन के लौकिक परिवार वालों से :–

सभी डबल वर्से के अधिकारी हो ना। लौकिक बाप के भी श्रेष्ठ संकल्प का खजाना मिला और पारलौकिक बाप का भी वर्सा मिला। अलौकिक का भी वर्सा मिला। तीन का वर्सा साथ-साथ मिला। तीनों बाप के आशाओं के दीपक हो। वैसे भी बच्चे को कुल का दीपक कहा जाता है। कुल के दीपक तो बने लेकिन साथ-साथ विश्व के दीपक बनो। सदा मस्तक पर भाग्य का सितारा चमक रहा है, बापदादा भी ऐसे हिम्मत रखने वाले बच्चों को सदा मदद करते हैं। जब भी संकल्प किया और बाप हाज़िर। बाप के ऊपर सारा कार्य छोड़ दिया तो बाप जाने, कार्य जाने। स्वयं सदा डबल लाइट फरिश्ता, ट्रस्टी बनकर रहो तो सदा हल्के रहेंगे। साफ दिल मुराद हासिल। श्रेष्ठ संकल्पों की सफलता जरूर होती है, एक श्रेष्ठ संकल्प बच्चे का और एक हजार श्रेष्ठ संकल्प का फल बाप द्वारा प्राप्त हो जाता है। एक का हजार गुणा मिल जाता है। अभी जो खजाने बाप के मिले हैं, उन्हें बाँटते रहो। महादानी बनो। सदैव कोई भी आवे तो आपके भंडारे से खाली न जाए। ज्ञान का फाउन्डेशन पड़ा हुआ है, वही बीज अभी फल देगा। अच्छा।

विदाई के समय बापदादा ने सभी बच्चों प्रति टेप में याद प्यार भरी

चारों ओर के सभी स्नेही बच्चों की यादप्यार और बधाई पाई। बापदादा के साथ सभी बच्चे दिल तख्तनशीन हैं। जो दिल पर हैं वह भूल कैसे सकते हैं। इसलिए सदा बच्चे साथ हैं और साथ ही रहेंगे, साथ ही चलेंगे। बापदादा सर्व बच्चों के दिल के उमंग उत्साह और सेवा में वृद्धि और मायाजीत बनने के समाचार भी सुनते रहते हैं। हरेक बच्चा महावीर है, महावीर बन विजय का झण्डा लहरा रहे हैं। इसलिए बापदादा सभी को विजय की मुबारक देते हैं। बधाई दे रहे हैं। सदा बड़े बाप के साथ बड़े से बड़े दिन उमंग-उत्साह से बिता रहे हो और सदा ही बड़े दिन मनाते रहेंगे। हरेक बच्चा यही समझे कि विशेष मेरे नाम से यादप्यार आया है। हरेक बच्चे को नाम सहित बापदादा सामने देखते हुए, मिलन मनाते हुए यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा।

प्रश्न:- एयरकन्डीशन की सीट बुक कराने का तरीका क्या है?

उत्तर:- एयरकन्डीशन की सीट बुक कराने के लिए बाप ने जो भी कन्डीशन्स बताई हैं उन पर सदा चलते रहो। अगर कोई भी कन्डीशन को अमल में नहीं लाया तो एयरकन्डीशन की सीट नहीं मिल सकेगी। जो कहते हैं कोशिश करेंगे तो ऐसे कोशिश करने वालों को भी यह सीट नहीं मिल सकती है।

प्रश्न:- कौन सा एक गुण परमार्थ और व्यवहार दोनों में ही सर्व का प्रिय बना देता है?

उत्तर:- एक दो को आगे बढ़ाने का गुण अर्थात् 'पहले आप ' का गुण परमार्थ और व्यवहार दोनों में ही सर्व का प्रिय बना देता है। बाप का भी यही मुख्य गुण है। बाप कहते – 'बच्चे पहले आप।' तो इसी गुण में फालो फादर।

28.12.82

सदा एक रस, सम्पूर्ण चमकता हुआ सितारा बनो

परमशिक्षक, सद्गुरू, बाप अपने चकते हुए सितारों, बच्चों प्रति बोले :–

''बापदादा सभी बच्चों को देख हर बच्चे के वर्तमान लगन में मगन रहने की स्थिति, और भविष्य प्राप्ति को देख हर्षित हो रहे हैं। क्या थे, क्या बने हैं और भविष्य में भी क्या बनने वाले हैं। हरेक बच्चा विश्व के आगे विशेष आत्मा है। हर एक के मस्तक पर भाग्य का सितारा चमक रहा है। ऐसा ही अभ्यास हो, सदा चमकते हुए सितासरे को देखते रहें, इसी प्रैक्टिस को सदा बढ़ाते चलो। जहाँ देखो, जब भी किसको देखो, ऐसा नैचुरल अभ्यास हो जो शरीर को देखते हुए न देखज्ञे। सदा नजर चमकते हुए सितारों की तरफ जाये। जब ऐसी रूहानी नजर सदा नैचुरल रूप में हो जायेगी तब विश्व की नजर आप चमकते हुए धरती के सितारों पर जायेगी। अभी विश्व की आत्मायें ढूँढ रही हैं। कोई शक्ति कार्य कर रही है, ऐसी महसूसता, ऐसी टचिंग अभी आने लगी है। लेकिन कहाँ है, कौन है, यह ढूंढते हुए भी जान नहीं सकते। भारत द्वारा ही आध्यात्मिक लाइट मिलेगी, यह भी धीरे-धीरे स्पष्ट होता जा रहा है। इस कारण विश्व की चारों तरप। से नजर हटकर भारत की तरफ हो गई है लेकिन, भारत में किस तरफ और कौन आध्यात्मिक लाइट देने के निमित्त हैं, अभी यह स्पष्ट होना है। सभी के अन्दर अभी यह खोज है कि भारत में अनेक आध्यात्मिक आत्मायें कह-लाने वली हैं, आखिर भी इनमें धर्मात्मा कौन और परमात्मा कौन है? यह तो नहीं है, यह तो नहीं है – इसी सोच में लगे हुए हैं। ''यही है'' इसी फैसले पर अभी तक पहुँच नहीं पाये हैं। ऐसी भटकती हुई आत्माओं को सही निशाना, यथार्थ ठिकाना दिखाने वाले कौन? डबल विदेशी समझते हैं कि हम ही वह हैं। फिर इतना विचारों को भटकाते क्यों हो? सदा के लिए ऐसी स्थिति बनाओ जो सदा चमकते हुए सितारे देखें। दूर से ही आपकी चमकती हुई लाइट दिखाई दे। अभी तक जो सम्मुख आते हैं, सम्पर्क आते हैं, उन्हीं को अनुभव होता है लेकिन दूर-दूर तक यह टचिंग हो, यह वायब्रेशन फैलें – उसमें अभी और भी अभ्यास की आवश्यकता है। अभी निमंत्रण देना पड़ता है कि आओ, आकर अनुभव करो। लेकिन जब चमकते हुए सितारे – सूर्य, चन्द्रमा समान, अपनी सम्पूर्ण स्टेज पर स्थित होंगे फिर क्या होगा। जैसे स्थूल रोशनी के ऊपर परवारे स्वत: ही आते हैं, शमा को बुलाने नहीं जाती है लेकिन प्यासे परवाने कहाँ से भी पहुँच जाते हैं। ऐसे आप चमकते हुए सितारों पर भटकती हुए आत्मायें, ढूंढने वाली आत्मायें स्वत: ही पाने के लिए, मिलने के लिए ऐसी फास्ट गति से आयेंगे जो आप सबको सेकेण्ड में बाप द्वारा मुक्ति, जीवनमुक्ति का अधिकार दिलाने की तीव्रगति से सेवा करनी पड़ेगी। इस समय मास्टर दाता का पार्ट बजा रहे हो। मास्टर शिक्षक का पार्ट चल रहा है। लेकिन अभी सतगुरू के बच्चे बन गति और सद्गति के वरदाता कापार्ट बजाना है। मास्टर सतगुरू का स्वरूप कौन सा है, जानते हो? अभी तो बाप का भी, बाप और शिक्षक का पार्ट विशेष रूप में चल रहा है इसलिए बच्चों के रूप में कभी-कभी बाप को भी नाज और नखरे देखने पड़ते हैं। शिक्षक के रूप में बार-बार एक ही पाठ याद कराते रहते हैं।सतगुर के रूप में गति-सद्गति का सर्टीफिकेट फाइनल वरदान सेकेण्ड में मिलेगा।

मास्टर सतगुरू का स्वरूप अर्थात् सम्पूर्ण फालो करने वाले। सतगुरू के वचन पर सदा सम्पूर्ण रीति चलने वाले – ऐसा स्वरूप अब प्रैक्टिकल में बाप का और अपना अनुभव करेंगें। सतगुरू का स्वरूप अर्थात् सम्पन्न, समान बनाकर साथ ले जाने वाले। सत-गुरू के स्वरूप में मास्टर सतगुरू भी नजर से निहाल करने वाले है। मत दी और गति हुई। इसलिए गुरु मंत्र प्रसिद्ध है। सेकेण्ड में मंत्र लिया और समझते हैं गति हो गई। मंत्र अर्थात् श्रेष्ठ मत। ऐसी पावरफुल स्टेज से श्रीमत देंगे जो आत्मायें अनुभव करेंगे कि हमें गति सद्गति का ठिकाना मिल गया। ऐसी शक्तिशाली स्थिति को अब से अपनाओ। सितारे तो अभी हो लेकिन अभी लाइट क्या होती है....?

सदा एक रस सम्पूर्ण चमकता हुए सितारा हो, ऐसे स्वंय को प्रत्यक्ष करो। सुना, क्या करना है? डबल विदेशी तीव्रगति वाले हो ना?या रूकते हो, चलते हो? कभी बादलो के बीच छिप तो नहीं जाते हो – बादल आते हैं? ऐसा सम्पूर्ण चमकता हुए सितारा और अभी अभी फिर बादलों में छिप जाये तो विश्व की आत्मायें स्पष्ट अनुभव कर नहीं सकतीं। इसलिए एक रस रहने का, सदा सूर्य समान चमकते रहने का संकल्प करो। अच्छा –

सभी डबल विदेशी बच्चों को और चारों ओर केसेवाधज्ञरी बच्चों को, सदा बाप समान मन, वाणी और कर्म में फालो करने वाले, सदा बाप के दिलतख्तनशीन, मास्टर दिलाराम, सदा भटकती हुई आत्माओं को रास्ता दिखाने वाले लाइट हाउस बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

पार्टियों के साथ –

नेरोबी पार्टी से – ''सभी रेस में नम्बरवन हो ना? नम्बरवन की निशानी है – हर बात में विन करने वाले अर्थात् वन नम्बर में आने वाले। किसी भी बात में हार न हो। सदा विजयी। तो नेरोबी निवासी सदा विजयी हो ना। कभी चलते-चलते रूकते तो नहीं हो। रूकने का कारण क्या होता? जरूर कोई न कोई मर्यादा वा नियम थोड़ा भी नीचे ऊपर होता है तो गाड़ी रूक जाती है। लेकिन यह संगमयुग है ही मर्यादा पुरुषोत्त बनने का युग। पुरुष नहीं, नारी नहीं लेकिन पुरुषोत्तम हैं, इसी स्मृति में सदा रहो। पुरुषों में उत्तम पुरुष प्रजापिता ब्रहमा को कहा जाता है। तो ब्रह्मा के बच्चे आप सब ब्रह्माकुमार कुमारियाँ भी पुरुषोत्तम हो गये ना। इस स्मृति में रहने से सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे, नीचे नहीं रूकेंगे। चलने से भी ऊपर सदा उड़ते रहेंगे क्योंकि संगमयुग उड़ती कला का युग है, और कोई ऐसा युग नहीं जिसमें उड़ती कला हो। तो स्मृति में रखज्ञे कि यह युग उड़ती कला का युग है, ब्राहमणों का कर्तव्य भी उड़ना और उड़ाना है। वास्तविक स्टेज भी उड़ती कला है। उड़ती कला वाला सेकण्ड में सर्व समस्यायें पार कर लेगा। ऐसा पार करेगा जैसे-कुछ हुआ ही नहीं। नीचे की कोई भी चीज डिस्टर्ब नहीं करेगी। रूकावट नहीं डालेगी। प्लेन में जाते हैं तो हिमालय का पहाड़ भी रूकावट नहीं डालता, पहाड़ को भी मनोरंजन की रीति से पार करते हैं। तो ऐसे ही उड़ती कला वाले के लिए बड़े ते बड़ी समस्या भी सहज हो जाती है।

नेरोबी अपना नम्बर आगे ले रही है ना। अभी वी.आई.पीज. की सर्विस में नम्बर आगे लेना है। संख्या तो अच्छी है, अभी देखेंगे कानफ्रेंस में वी.आई.पीज. कौन कौन ले आता है। अभी है वह नम्बर है। सबसे नम्बरवन वी.आई.पीज. कौन लाता है, अभी यह रेस बापदादा देखेंगे।''

नये हाल के लिए चित्र बनवाने वाले चित्रकारों प्रति बापदादा का ईशारा –

''चित्रकार बन करके चित्र बना रहे हो वा स्वयं उस स्थिति में स्थित हो करके चित्र बनाते हो! क्या करतेम हो? क्योंकि और कहाँ भी कोई चित्र बनाते हैं तो वह रिवाजी चित्रकार चित्र बना देते हैं। यहाँ चित्र बनाने का लक्ष्य क्या है? जैसे बाप का चित्र बनायेंगे तो उसकी विशेषता क्या होनी चाहिए? चित्र चैतन्य को प्रत्यक्ष करें। चित्र के आगे जाते ही अनुभव करें कि यह चित्र नहीं देख रहा है, चैतन्य को देख रहा है। वैसे भी चित्र की विशेषता – चित्र जड़ होते चैतन्य अनुभव हो, इसी पर प्राइज मिलती है। उसमें भी भाव और प्रकार काहोता। लेकिन रूहानी चित्र का लक्ष्य है – चित्र रूहानी रूह को प्रत्यक्ष कर दे। रूहानियत का अनुभव कराये। ऐसे अलौकिक चित्रकार, लौकिक नहीं। लौकिक चित्रकार तो लौकिक बातों को – नयन, चैन को देखेंगे लेकिन यहॉ रूहानियत का अनुभव हो – ऐसा चित्र बनाओ। (आशीर्वाद चाहिए) आशीर्वाद तो क्या आशीर्वाद की खज्ञन पर पहुँच गये हो, मांगने की आवश्यकता नहीं है, अधिकार लेने का स्थान है। जब वर्से रूप में प्राप्त हो सकता है तो थोड़ी सी ब्लेसिंग क्यों? खान पर जाकर दो मुट्ठी भरकर आना उसको क्या कहा जायेगा। बाप जैसे स्वयं सागर है तो बच्चों को भी मास्टर सागर बनायेंगे ना। सागर में कोई भी कमी नहीं होती। सदा भरपूर होता है। अच्छा –''

स्वीडन पार्टी से :–'' सदा निश्चयबुद्धि विजीय रतन हैं।'' – इसी नशे में रहो। निश्चय का फाउन्डेशन सदा पक्का है। अपने आप में निश्चय, बाप में निश्चय और ड्रामा में निश्चय के आधार पर आगे बढ़ते चलो। अभी जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो, कमजोरियों को नहीं, तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहींसोचना तो फिर खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। बाप का हाथ लिया तो बाप हाथ पकड़ने वाले सदा आगे बढ़ते हैं, यह निश्चय रखो। जब बाप सर्वशक्तिवान है तो उसका हाथ पकड़ने वाले पर पहुँचे कि पहुँचे। चाहे खुद भले कमजोर भी हो लेकिन साथी तो मजबूत है ना। इसलिए पार हो ही जायेंगे। सदा निश्चयबुद्धि विजयी रतन इसी स्मृति में रहो। बीती सो बीती, बिन्दी लगाकर आगे बढ़ो।''

महावाक्यों का सार

१. सदा नजर चकते हुए सितारे तरफ जाए। जब ऐसी रूहानी नजर सदा नेचुरली रूप में हो ही जावेगी तब विश्व की नजर आप चमकते हुए धरती के सितारों पर जायेगी।

31.12.82

बापदादा की सर्व अलौकिक फ्रैन्डस को बधाई

खुदा दोस्त बाप दादा अपने रूहानी मीत बच्चों प्रति बोले :–

''आज सर्व ब्राहमण आत्माओं के मन के मीत , दिल के गीत, प्रीत की रीति निभाने के लिए वन्डरफुल रीति से रूहानी गुलाब फूलों के बगीचे में वा अल्लाह अपने बगीचे मेंमिलने के लिए आये हैं। वैसे भी मीत कहो वा फ्रेन्डस कहो, बगीचे में मिलन मनाते हैं। ऐसा बगीचा सरे कल्प में मिल नहीं सकता। आज चारों तरफ के बच्चे इसी एक लगन में हैं कि हम भी अपने मन के मीत यह न्यू ईयर डे मनावें। बापदादा आज सिर्फ साकारी स्वरूप में सन्मुख बैठे हुए रूहानी फ्रैन्डस से नहीं मिल रहे हैं। लेकिन साकार सभी से आकार रूपधारी बच्चों की वा मन के मीत स्नेही आत्माओं की बहुत बड़ी सभा देख रहे हैं। इतने रूहानी फ्रैन्डस, सच्चे फ्रैन्डस और किसको होंगे ? बापदादा को भी रूहानी फखुर है कि ऐसे और इतने फ्रैन्डस न किसको मिले हैं न मिलेंगे। सबके दिल का गीत दूर से वा समीप से सुनाई दे रहा है। कौन सा गीत ? ओ बाबा। यही ''बाबा बाबा'' का गीत एक ही साज और राज से चारों ओर से सुनाई दे रहा है। बच्चे कहो वा फ्रैन्डस कहो, सभी का एक ही बोल है ''तुम ही मेरे'' और खुदा दोस्त भी एक एक को यही कहते कि तुम ही मेरे। 'वाह मेरे फ्रैन्डस।' गीत गाओ –(बहनों ने साकार बाबा का प्यारा गीत गाया, तुम्हीं मेरे.....)

यह मुख का गीत तो थोड़ा समय गा सकते लेकिन मन का गीत तो अविनाशी बजता रहता। आज के न्यू इयर डे पर अनेक बच्चों के बहुत अच्छे संकल्प, स्नेह के बोल बापदादा के पास पहले से पहुँच गये हैं। आज का दिन खुशियों का मनाते हो ना। एक दो को बधाई देते हो। बापदादा भी सर्व मन के मीत अलौकिक रूहानी फ्रैन्डस को बधाई देते हैं।

सदा विधि द्वारा वृद्धि को पाते रहेंगे। सदा सर्व खजानों से सम्पन्न रहेंगे। सदा फरिश्ता बन सर्व के देह के रिश्तों से पार उड़ते रहेंगे। सदा नयनों में, दिल में बाप को समाते हुए एक बाप दूसरा न कोई – इसी लगन में मगन रहेंगे। सदा आई हुई परीक्षाओं को, सम-स्याओं को, व्यर्थ संकल्पों को पानी पर लकीर के समान पार कर पास विथ आनर बनेंगे। ऐसी श्रेष्ठ शुभ कामनाओं से बधाई दे रहे हैं। एक एक अमूल्य रतन की विशेषताओं के गीत गा रहे हैं। आज के दिन नाचते गाते हैं ना। सिर्फ आज नहीं लेकिन सदा नाचते और गाते रहो। सदा हरेक को एक अलौकिक गिफ्ट देते रहना। जैसे बड़े आदमी कहाँ जाते हैं वा उनके पास कोई आते हैं तो खाली हाथ न जाते हैं। आप सब भी बड़े ते बड़े हो ना। कभी भी किसी भी ब्राहमण आत्मा से वा किसी से भी मिलते हो तो कुछ देने के बिना कैसे मिलेंगे। हरेक को शुभभावना और शुभ कामना की गिफ्ट सदा देते रहो। विशेषता दो और विशेषता लो। गुण दो और गुण लो। ऐसी गाडली गिफ्ट सभी को देते रहो। चाहे कोई किसी भी भावना वा कमाना से आये लेकिन आप शुभ भावना की गिफ्ट दो। शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना की गिफ्ट का स्टाक सदा भरपूर रहे। यह संकल्प मात्र भी उत्पन्न न हो कि आखिर भी कहाँ तक शुभ भावना से देखें। आखिर भी कोई हद है वा नहीं। यह संकल्प भी सिद्ध करता है कि इस गोल्डन गिफ्ट का स्टाक जमा नहीं है।

दाता, विधाता, वरदाता के बच्चे, भाग्य की लकीर खींचने वाले ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ हो इसलिए सदा भण्डारा भरपूर रहे। इस वर्ष खाली किसको नहीं रहने देना। न खाली हाथ जाना न खाली हाथ आना। सबको देना भी और सबसे लेना भी। यह गिफ्ट बाँटने का वर्ष है। सिर्फ एक दिन नहीं, लेकिन सारा वर्ष हर दिन, हर घण्टा, हर सेकेण्ड, हर संकल्प जो बीता उससे और रूहानी नीवनता लोने वाला हो। नया दिन, नई रात तो सब कहते हैं लेकिन श्रेष्ठ आत्माओं का नया सेकण्ड, नया संकल्प हो तब ही आने वाली नई दुनिया का नई झलक विश्व की आत्माओं को स्वप्न के रूप में वा साक्षात्कार के रूप में दिखाई देगी। अब तक विश्व की आत्मयें जानने की इच्छुक हैं कि विनाश के बाद क्या होगा ? लेकिन इस वर्ष सर्व आधार स्वरूप आत्माओं का हर सेकण्ड, और हर संकल्प, नये ते नया, ऊंचे ते ऊंचा, अच्छे ते अच्छा रहे तो चारों ओर से नई दुनिया की झलक देखने का आवाज फैलेगा और क्या होगा इसके बजा ऐसे होगा। ऐसी वन्डरफुल दुनिया जल्दी आवे और जल्दी तैयारी करें – इसमें जुट जायेंगे। जैस स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला विशेष रही, ऐसे अन्त में भी यही विचित्र लीला प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेंगी। चारों ओर से ''यही है, यही है'', यही आवाज़ गूजेंगी और यह आवाज अनेकों के भाग्य की श्रेष्ठता के निमित्त होगा। ऐ से अनेक दीपक जग जायेंगे।

तो इस वर्ष क्या करना है ? सच्ची दीपमाला मनाने की तैयारी करनी है। पुरानी बातें, पुराने संस्कार का दशहरा मनाओ। क्योंकि दशहरे के बाद ही दीपमाला होगी। तो आज मन के मीत आत्माओं से मन की बात कर रहे हैं। मन की बात किससे करते हैं ? फ्रेन्डस से करते हो ना। अच्छा बधाई तो मिली। बधाई के साथ-साथ नये साल की सौगात भी सदा साथ रखना। कितनी सौगात चाहिए ? एक एक में बहुत समाई हुई भी है ओर बहुत भी एक है। सबसे बढ़िया सौगात जो खजाना चाहो वह हाजिर हो जायेगा। ''डायमण्ड की (key) दी है। जिससे जो खजाना चाहो वह हाजिर हो जायेगा। ''डायमण्ड की'' क्या है ? सम्भाली हुई है ना। चोरी तो नहीं हो गई है ना। चाबी को खोया तो सब खजाने खोये। इसलिए चाबी साथ साथ रखना। 'कीचेन है ? वा अकेली चाबी है ? ''की''की चेन है – सदा सर्व सम्बन्धों से स्मृति स्वरूप होते रहो। तो 'की चेन' की गिफ्ट मिली ना। सबसे बढ़िया गिफट तो है

यह चाबी। उस के साथ-साथ वर्ष के लिए विशेष प्रतिज्ञा का कंगन भी दे रहे हैं। वह प्रतिज्ञा का कंगन क्या है? जो सुनाया हर सेकण्ड , हर संकल्प, हर आत्मा के सम्पर्क में सदा नये ते नया अर्थात् ऊंचे ते ऊंचा। नीचे की बात को न देखना है, न नीचे की स्टेज अपनानी है, सदा ऊंचा। ऊंचा बाप, ऊंचे बच्चे, ऊंची स्टेज और ऊंचे ते ऊंची सर्व की सेवा हो। यह प्रतिज्ञा का कंगन है।

साथ-साथ सर्व गुणों के श्रृंगार का बाक्स। वैरायटी सेट का श्रृंगार बाक्स। जिस समय जो श्रृंगार चाहिए उस समय वही सेट धारण कर सदा सजे-सजाये रहना। कभी सहनशीलता का सेट पहनना, लेकिन फुलसेट पहनना। सिर्फ एक सेट नहीं पहनना। कानों द्वारा भी सहनशीलता हो, हाथों द्वारा भी सहनशीलता का श्रृंगार हो। ऐसे समय-समय पर भिन्न-भिन्न श्रृंगार करते हुए विश्व के आगे फरिश्ते रूप और देव रूप में प्रख्यात हो जायेंगे। यह त्रिमूर्ति सौगात सदा साथ रखना।

फ्रैन्डशिप निभाने तो आती है ना। डबल विदेशी फ्रैन्डस तो बहुत अच्छे बनाते हैं लेकिन अविनाशी फ्रैन्डशिप रखना। डबल विदेशी छोड़ने में भी होशियार हैं, करने में भी होशियार हैं। अभी अभी हैं और अभी अभी नहीं, ऐसे तो नहीं करेंगे ना। बापदादा डबल विदेशी बच्चों कोदेख हर्षित होते हैं, कैसे चारों कोनों से इशारा मिलते पुरानी पहचान कर ली। बाप ने बच्चों को ढूंढा और बच्चों ने पहचान लिया। इसी विशेषता को देख बापदादा भी बधाई दे रहा है। इसलिए सदा मायाजीत रहो। अच्छा –

ऐसे सिकीलधे बच्चों को अविनाशी प्रीत की रीति निभाने वाले अविनाशी फ्रैन्डस को सदा फूलों के बगीचे में हाथ में हाथ दे साथी वन सैर करने वाले, सदा गाडली गोल्डन गिफट को कार्य में लानेवाले सदा सम्पन्न, सदा मास्टर दाता, सर्व के मास्टर भाग्य विधाता ऐसे स्नेही सहयोगी चारों ओर के बच्चों को, साकारी वा आकारी रूपधारी बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।''

विदेशी टीचर्स से :– ''निमित्त शिक्षक को देख बापदादा अति हर्षित हो रहे हैं। कितनी लगन से, स्नेह से अपने अपने स्थान पर रहते सभी सदा शक्ति स्वरूप स्थिति में स्थित हो सर्व शक्तियों का अनुभव कराते रहते हैं। अभीसाधारण नारी वा कुमारी का रूप नहीं लेकिन सर्व श्रेष्ठ सेवाधारी आत्मायें। बापदादा शोकेस के शोपीस हो। आप सबको देख सर्व आत्मायें बाप को पहचानती हैं। हरेक निमित्त शिक्षक के ऊपर विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी है। बेहद के सेवाधारी हो – ऐसे अपने को समझती हो? एक एरिया के कल्याणकारी तो नहीं समझती? चाहे एक स्थान पर बैठे हो लेकिन हो तो लाइट हाउस ना। चारों ओर लाइट देने वाले। तो छोटा सा बल्ब बनकर एक ही स्थान पर रोशनी देते या लाइट हाउस बन विश्व को रोशनी देते? लाइट हो सर्चलाइट हो या लाइट हाउस हो? हिम्मत तो बहुत अच्छी रखी है। बहुत अच्छज्ञ कर रहे हो आगे भी अच्छे ते अच्छा करते रहो। टीचर्स तो सदा मायाजीत है ना? अगर टीचर्स के पास माया आयेगी तो स्टूडेन्ट का क्या हाल होगा? आपके पास यादि एक बार माया आयेगी तो उनके पास १० बार आयेगी। इसलिए टीचर्स के पास माया नमस्ते करने आवे, वैसे नहीं।

निमित्त शिक्षक का स्वरूप – सदा हर्षित, सदा मास्टर सर्वशक्तिवान – ऐसी सीट पर सदा सेट रहो। टीचर्स के रहने का स्थान ही ऊंची स्थिति है। सेन्टर परनहीं रहती हो लेकिन ऊंची स्टेज पर रहती हो। ऊंची स्टेज अर्थात् दिलतख्त पर माया आ नहीं सकती। नीचे उतरे तो माया आयेगी। पाण्डव भी बापदादा के सहयोगी राइट हैण्ड हो ना। गद्दी सम्भालने वाले को राइट हैण्ड कहा जाता है। सभी पाण्डव विजयी हो ना। अभी तक माया से बहुत समय खेल खेला। अभी विदाई दो आज से सदा के लिए विदाई की बधाई मनाना। बहुत अच्छा चान्स मिला है और चान्स ले भी रहे हो। अच्छा –

(पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकातें)

बापदादा हर एक बच्चे के भाग्य को देख हर्षित होते हैं। हरेक बच्चा अपना भाग्य ले रहा है। संगम पर हरेक आत्मा का भाग्य अपना अपना है। और हरेक का श्रेष्ठ भाग्य है। क्यों? क्योंकि जब श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप के बच्चे बने तो श्रेष्ठ भाग्य हो गया ना। न इससे कोई बाप श्रेष्ठ है, न इससे कोई भाग्य श्रेष्ठ है। ऊंचे ते ऊंचा बाप। यही याद रहता है ना। भाग्य विधाता मेरा बाप है। इससे बड़ा नशा और क्या हो सकता है। लौकिक रीति से बच्चे को नशा रहता – मेरा बाप इन्जीनियर है, डाक्टर है, जज है या प्राइममि-निस्टर है। लेकिन आपको नशा है कि हमारा बाप भाग्यविधाता है। ऊंचे ते ऊंचा भगवान है। यही नशा सदा रहता है या कभी कभी भूल जाते हा? भाग्य को भूला तो क्या होगा? फिर भाग्य कोपाने का प्रयत्न करना पड़ेगा। खोई हुई चीज को पानके लिए मेहनत करनी पड़ती है। बाप ने आकर मेहनत से बचाया। आधाकल्प मेहनत की, व्यवहार में भी मेहनत, भक्ति में, धर्म के क्षेत्र में, सबसे मेहनत ही की। और कभी सभी मेहनत से छूट गये। अभी व्यवहार भी परमार्थ के आधार पर सहज हो जाता है। निमित्त मात्र कर रहे हैं। निमित्त मात्र करने वाले को सदा सहज अनुभव हो गा। व्यवहार नहीं है लेकिन खेल है। माया का तूफान नहीं लेकिन यह ड्रामा अनुसार आगे बढ़ने का तोफा है। तो मेहनत छूट गई ना। तोफा अर्थात् सौगात लेने में मेहनत नहीं होती है ना। तो ऐसे मेहनत से अपने को बचाने वाले, सदा भाग्य विधाता के साथ मास्टर भाग्य विधाता बन रहने वाले इसको कहा जाता है श्रेष्ठ आत्मा।

सैनअन्टनियो:– सभी अपने को विशेश आत्मा समझते हो? किस स्थान पर पहुँचे हो? सोचो कि ऐसा भाग्य विश्व में कितनी आत्माओं का होगा जो सम्मुख मिलन मनायें? इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए। सदा अपने इसी भाग्य को स्मृति में रखो तो आपके भाग्य की प्राप्ति की खुशी को देख और समीप आयेंगे। और अपना भाग्य बनायेंगे। सदा खुश रहो। बाप के बच्चे बने तो

वर्से में क्या मिला? खुशी मिली ना। तो इस वर्से को सदा साथ रखना, छोड़कर नहीं जाना। खुशी के खजानों के मालिक बन गये। तो सदा खुशी में उड़ते रहना। इसमें ट्राई करने की बातें नहीं। अगर कहते ट्राई तो क्राई होते रहेंगे। क्या बच्चे बनने मे भी ट्राई करनी होती है। तो न ट्राई न क्राई। ट्राई करेंगे, यह शब्द यहाँ छोड़कर जाना। बाप और वर्सा सदा साथ रहे। कम्बाइन्ड रहना। तो जहाँ बाप है वहाँ सर्व खजाने स्वत: ही होंगे। यही एक बात सदा याद रखना कि बाप हमारे साथ है। वर्सा हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

नर्व वर्ष की मुबारक (रात्रि १२ बजे) :- नये वर्ष की सभी बच्चों सारे वर्ष के लिए बधाई हो। ऐसे अमूल्य रत्न जिनहोंने बाप को पहचाना और बाप को प्रत्यक्ष करने की जिम्मेवारी का ताज धारण किया ऐसे सदा सेवाधारी अनन्य ताजधारी, तख्तनशीन बच्चों अपने अपने नाम सहित बधाई स्वीकार हो।

लण्डन निवासी निमित्त जनक बेटी, और साथ साथ रतन रजनी बच्ची साथ में मुरली बच्चा और सबसे अति स्नेही छोटी समान बाप जयन्ती बच्ची को और जो साथ साथ बच्चे सेवा पर उपस्थित है जैसे वृजरानी अच्छा अपना शो दिखा रही है, जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा में रूहानियत भरी हुई है – ऐसे सभी बच्चे अपने अपने नाम से बधाई स्वीकार करें।

नये वर्ष, नया उमंग, नया उत्साह और इस वर्ष में सदा ही रोज उत्सव समझकर उत्साह दिलाते रहना। इसी सेवा में सदा तत्पर रहना। अच्छा – सभी बच्चों को बापदादा की दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार।